भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में राजभाषा के बढ़ते चरण

भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान में वर्ष-दर-वर्ष हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में अभिवृद्धि हो रही है। संस्थान का समस्त प्रशासनिक कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में और यथा आवश्यक द्विभाषी रूप में ही हो रहा है।

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए परिषद् मुख्यालय द्वारा चलायी जा रही 'राजर्षि टंडन राजभाषा पुरस्कार योजना' के अन्तर्गत वर्ष 2005-06 के दौरान सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में उल्लेखनीय योगदान के लिए परिषद् के बड़े संस्थानों के वर्ग में संस्थान को प्रथम तथा उत्कृष्ट गृह पत्रिका के प्रकाशन के लिए 'गणेश शंकर विद्यार्थी हिन्दी कृषि पत्रिका पुरस्कार योजना' के अन्तर्गत संस्थान की पत्रिका 'सांख्यिकी-विमर्श' को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किये गये। ये पुरस्कार परिषद् के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर दिनांक 28 नवम्बर 2006 को परिषद् के महानिदेशक महोदय द्वारा प्रदान किये गये जिन्हें संस्थान के निदेशक महोदय ने ग्रहण किया।

संस्थान में हिन्दी की प्रगति का जायज़ा लेने के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, दिल्ली

निदेशक हिन्दी अनुभाग को संस्थान द्वारा प्राप्त राजर्षि टंडन राजभाषा प्रथम पुरस्कार प्रदान करते हुए

द्वारा दिनांक 22 मई 2006 को संस्थान का निरीक्षण किया गया तथा संस्थान में हो रहे हिन्दी कार्यों की सराहना की गयी।

संस्थान के पूर्वानुमान तकनीक प्रभाग की प्रधान एवं राजभाषा

प्रभारी, डॉ. (श्रीमती) रंजना अग्रवाल को भारत सरकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा आयोजित 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार योजना' (2003) के अन्तर्गत उनकी पाण्डुलिपि 'मच्छर ने समझाया' के लिए 12 मई 2006 को माननीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री, श्री प्रियरंजन दासमुंशी के कर-कमलों द्वारा (संयुक्त रूप से दो व्यक्तियों को) द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

प्रतिवेदनाधीन अवधि में संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकें नियमित रूप से आयोजित की गयीं। उनमें लिये गये निर्णयों पर कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए संस्थान में गठित राजभाषा निरीक्षण समिति द्वारा निरीक्षण किया गया। इस समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में लिये गये निर्णयों के कार्यान्वयन पर निगरानी रखी जाती है। स्थिति के अनुसार समिति द्वारा अपने सुझाव एवं संस्तुतियाँ निदेशक महोदय के समक्ष प्रस्तुत की गयीं तथा निदेशक द्वारा दिये गये आदेशों को विभिन्न प्रभागों/अनुभागों में परिचालित किया गया।

इस वर्ष में संस्थान के कर्मियों के लिए चार कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं। दिनांक 16-17 जून 2006 के दौरान संस्थान के वैज्ञानिक एवं तकनीकी वर्ग के लिए "वैज्ञानिक/तकनीकी सामग्री का हिन्दी अनुवाद" विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के पूर्व अध्यक्ष, प्रो. सूरज भान सिंह ने "वैज्ञानिक अनुवाद एवं लेखन" विषय पर तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक, डॉ. विचार दास ने "वैज्ञानिक अनुवाद की समस्याएँ" विषय पर व्याख्यान दिये। द्वितीय कार्यशाला 16 तथा 18 सितम्बर 2006 को "हिन्दी वर्तनी एवं व्याकरण" विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक

कार्यशाला में प्रतिभागी भाग लेते हुए

निदेशक (राजभाषा), श्री सुरेन्द्र उनियाल ने "हिन्दी वर्तनी" विषय पर तथा प्रख्यात साहित्यकार एवं पूर्व वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी), पं. मधुर शास्त्री ने 'हिन्दी व्याकरण' विषय पर व्याख्यान दिये। तृतीय कार्यशाला 17 तथा 18 नवम्बर 2006 को 'राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन' विषय पर आयोजित की गयी जिसमें क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (दिल्ली) के उप-निदेशक, श्री प्रेम सिंह ने 'राजभाषा नीति एवं कार्यान्वयन' विषय पर तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उपनिदेशक (कार्यान्यवन), श्री नेत्र सिंह रावत ने 'आँकड़ों का रखरखाव' विषय पर व्याख्यान दिये। चतुर्थ कार्यशाला 15 से 17 मार्च 2007 के दौरान 'हिन्दी टंकण' विषय पर आयोजित की गयी। इस कार्यशाला में संस्थान के उन कर्मियों ने सहभागिता की जो हिन्दी टंकण नहीं जानते थे परन्तु हिन्दी टंकण जानने के इच्छुक थे। इस कार्यशाला में राजभाषा

एक वैज्ञानिक कार्यशाला प्रतिभागिता का प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए

विशेष कार्य अधिकारी एवं कार्यालय प्रधान कार्यशाला के प्रतिभागी को सम्बोधित करते हुए

हिन्दी टंकण के लिए एक प्रतिभागी प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए

विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना, नई दिल्ली की सहायक निदेशिका (टंकण एवं आशुलिपि), श्रीमती ऊषा शर्मा ने 15 मार्च 2007 को तथा राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना, नई दिल्ली की ही सहायक निदेशिका (टंकण एवं आशुलिपि), सुश्री आशा ने 16 तथा 17 मार्च 2007 को कम्प्यूटर पर हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण दिया।

संस्थान में कार्यरत सभी हिन्दीतर भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिन्दी ज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण पूरा किया जा चुका है। आज तक की स्थिति के अनुसार, संस्थान में अब कोई ऐसा हिन्दीतर भाषी अधिकारी/कर्मचारी शेष नहीं रह गया है जिसे हिन्दी ज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाना शेष हो। इसके अतिरिक्त, 'हिन्दी शिक्षण योजना' के अन्तर्गत संस्थान में हिन्दी आशुलिपि के प्रशिक्षण का लक्ष्य भी संस्थान द्वारा पूरा कर लिया गया है तथा केवल हाल ही में नियुक्त दो कनिष्ठ लिपिकों को ही हिन्दी टंकण का प्रशिक्षण दिया जाना शेष है।

संस्थान में वार्षिक कार्यक्रम में निहित लक्ष्यों को पूरा करते हुए संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपनी ओर से लिखे जाने वाले सभी पत्र तो हिन्दी अथवा द्विभाषी रूप में लिखे ही गये साथ ही, 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों से अंग्रेज़ी में प्राप्त पत्रों के उत्तर भी शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा द्विभाषी रूप में दिये गये। 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों की राज्य सरकारों एवं उनके कार्यालयों और ग़ैर-सरकारी व्यक्तियों के साथ पत्राचार शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा अपेक्षानुसार द्विभाषी रूप में ही किया गया। संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिक प्रभागों तथा प्रशासनिक अनुभागों द्वारा आयोजित की जाने वाली बैठकों की कार्यसूची तथा कार्यवृत्त शत-प्रतिशत हिन्दी में अथवा द्विभाषी रूप में जारी किये गये।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार अपना कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिए सात अनुभागों को विनिर्दिष्ट करने का लक्ष्य संस्थान द्वारा पहले ही प्राप्त कर लिया गया है। हमारे संस्थान में अपना कार्य शत-प्रतिशत हिन्दी में करने के लिए दस अनुभाग पहले से ही विनिर्दिष्ट हैं।

प्रशासनिक कार्य के अतिरिक्त संस्थान में वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी हिन्दी के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है। वैज्ञानिकों ने अपनी परियोजना रिपोर्टों के सारांश द्विभाषी रूप में दिये, विद्यार्थियों द्वारा अपने शोध-प्रबन्धों में द्विभाषी रूप में सारांश प्रस्तुत किये गये। वैज्ञानिकों एवं तकनीकी कर्मियों द्वारा हिन्दी में शोध-पत्र प्रकाशित किये गये तथा अनेक शोध-पत्र प्रकाशन हेतु भेजे गये। इसके अतिरिक्त, संस्थान से बाहर आयोजित सम्मेलनों में भी संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा हिन्दी में शोध-पत्र/पोस्टर प्रस्तुत किये गये। संस्थान की वेबसाइट द्विभाषी है जिसको समय-समय पर अद्यतन किया गया।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी तथा परिचालित विभिन्न नकद पुरस्कार योजनाएँ संस्थान में लागू हैं। संस्थान के कर्मियों ने इन योजनाओं में भाग लिया।

संस्थान में सितम्बर, 2006 के दौरान हिन्दी चेतनामास का आयोजन किया गया। इस दौरान अनेक कार्यक्रम/प्रतियोगिताएँ जैसे - अन्ताक्षरी, हिन्दी निबन्ध, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, काव्य-पाठ, वर्तनी, आशुलिपि, टंकण, वाद-विवाद, शोध-पत्र-पोस्टर-प्रदर्शन, प्रश्न-मंच इत्यादि आयोजित किये गये। इस वर्ष से वर्तनी प्रतियोगिता को हिन्दी चेतनामास के कार्यक्रमों में एक नयी कड़ी के रूप में सम्मिलित किया गया। संस्थान में 05 सितम्बर 2006 को 'शिक्षक दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं संस्थान के पूर्व निदेशक, प्रो. मनेन्द्र नाथ दास को सम्मानित किया गया। संस्थान में हर वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया जाता है। दिनांक 14 सितम्बर 2006 को हिन्दी दिवस के अवसर पर डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यानमाला का 15वाँ व्याख्यान राष्ट्रीय कृषक आयोग के सदस्य एवं कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के पूर्व अध्यक्ष, प्रो. राम बदन सिंह द्वारा "लघु कृषक अनुकूल कृषि अनुसंधान एवं किसान नीति" विषय पर दिया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के पूर्व अध्यक्ष, प्रो. कीर्ति सिंह ने की। दिनांक 22 सितम्बर 2006 को संस्थान के वैज्ञानिकों/तकनीकी कर्मियों/छात्रों के लिए शोध-पत्र-पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में 15 शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये जिसमें से तीन श्रेष्ठ शोध-पत्रों का चयन आमंत्रित निर्णायकों द्वारा किया गया। हिन्दी चेतनामास के समापन के अवसर पर संस्थान में हो रहे हिन्दी कार्यों तथा चेतनामास के दौरान आयोजित समस्त कार्यक्रमों/ प्रतियोगिताओं की एक झलकी प्रस्तुत की गयी तथा विभिन्न कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं

शोध-पत्र-पोस्टर-प्रदर्शन प्रतियोगिता का एक दृश्य

शिक्षक दिवस समारोह का एक दृश्य

के सफल प्रतियोगियों को निदेशक महोदय द्वारा पुरस्कृत किया गया।

संस्थान की हिन्दी पत्रिका, 'सांख्यिकी-विमर्श' के दूसरे अंक का प्रकाशन किया गया। इस अंक में संस्थान के कीर्तिस्तम्भ, सांख्यिकी के विषय में रोचक लेख, सांख्यिकी के ऐतिहासिक विकास और देश में उपलब्ध राष्ट्रीय सांख्यिकी तंत्र से सम्बन्धित लेख, कृषि सांख्यिकी से सम्बन्धित आधुनिकतम पद्धतियों का विवरण, सूक्ष्म वित्त प्रणाली एवं संस्थान द्वारा विकसित सॉफ्टवेयरों में से एक की विस्तृत जानकारी तथा पूर्वानुमान एवं पूर्व-चेतावनी जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर सामग्री का समावेश है। देश में कृषि पर एकमात्र संग्रहालय का रोचक व सजीव वर्णन है। डॉ. दरोगा सिंह स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत राष्ट्रीय कृषक आयोग के सदस्य एवं कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के पूर्व अध्यक्ष, प्रो. राम बदन सिंह द्वारा दिया गया व्याख्यान आमंत्रित ज्ञानवर्धक लेख के रूप में पत्रिका में सम्मिलित किया गया है। कृषि सांख्यिकी के क्षेत्र में प्रयोग होने वाले सौ तकनीकी शब्दों का शब्द-शतक हिन्दी व अंग्रेज़ी में दिया गया है ताकि लेखकों को हिन्दी में लेख लिखने में आसानी हो सके।